जरा इनकी भी सुन लो...



दिवाली की छुट्टियों में परिवार चार-पाँच दिन घूमने गया। घर खाली होते ही सबको अपनी तकलीफ कहने का मौका मिल गया।

सबसे पहले डाइनिंग टेबल बोला,

मुझे खाने के लिए बनाया गया है, लेकिन मेरे पर घंटों बैठकर बातें करते हैं, न्यूजपेपर पढ़ते हैं और खाना आते ही थाली लेकर टीवी देखने सोफे पर चले जाते हैं।

टीवी ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा,

अब तो मैं सिर्फ दिखावे का रह गया हूँ। मुझे चालू करके अपने-अपने मोबाइल देखते रहते हैं।

सोफा बोला,

तुम क्या जानो मेरी तकलीफ... मैं मुलायम क्या हुआ, मोबाइल देखते-देखते मुझ पर ही सो जाते हैं। अरे, जाओ बेड पर जाकर सोओ।

बेड बोला,

मेरा मुँह मत खुलवाओ, सोफा! सोते कहाँ हैं? दिनभर तो सबके सामने बहुत अच्छे बनते हैं, पर रात को मेरे ऊपर आते ही झगड़ा शुरू कर देते हैं।

फ्रिज बोला,

दिनभर तो मुझे खोलते बंद करते रहते हैं, देर रात को भी पता नहीं क्या ढूँढने चले आते हैं।

पंखा बोला,

जब से ए.ष्ट आया है, मेरी तो कोई वैल्यू ही नहीं रही। लल्लू पंजू समझ रखा है। एक तो सस्ते में सोमनाथ की यात्रा करवाता हूँ, फिर भी चालू करके बंद करना भूल जाते हैं। कोई नहीं होता फिर भी घूमता रहता हूँ।

AC बोला,

अरे पंखे, ऐसी बात नहीं है। मुझे 16 डिग्री पर चलाएँगे और दो दो कंबल ओढ़कर सोएँगे। 24 डिग्री ठीक है, पर इन्हें कौन समझाए। चालीस हजार के.ष्ट में स्विट्जरलैंड की फीलिंग जो लेनी है।

माइक्रोवेव बोला,

मुझे तो दिखावे के लिए लाए हैं, देखो, हमारे घर में भी माइक्रोवेव है। मुझमें डेरों चीजें बन सकती हैं, लेकिन बस दो मिनट खाना गरम कर लेते हैं। अरे, मैं कोई गैस थोड़ी हूँ! मैं तो हाईफाई चीज हूँ।

गैस बोली,

ओए, मेरा नाम मत ले। मेरे पर दुनिया भर की चीजें आसानी से बनती हैं। तेरे जैसी नहीं हूँ कि चलाने के लिए पीएचडी करनी पड़े।

मिक्सी बोली,

मसाले और चटनी इतनी आसानी से पीस देती हूँ, फिर भी मेरी कदर नहीं। कभी खलबट्टा चलाकर देखो, खुद ही बोलोगे, मिक्सी तो वरदान है।

गीजर बोला,

मुझे तो चालू करके बंद करना ही भूल जाते हैं। मैं अंदर ही अंदर खौलता रहता हूँ।

वॉशिंग मशीन बोली,

मेरी क्षमता साफ लिखी है, फिर भी कपड़े ठूस-ठूँसकर भर देते हैं। अपना पेट समझ रखा है क्या? मेरा तो दम घुटता है।

अलमारी बोली,

शॉपिंग से अपनी फ्रस्ट्रेशन उतारते हैं और फिर मुझमें सब भर देते हैं। खोलते ही लगता है जैसे सब अभी गिर पड़ेगा। फिर मुझे भी गुस्सा आता है, चीज ऐसी जगह रख देती हूँ कि ढूँढते रह जाते हैं।

अंत में मटिट बोला,

जब भी आते हैं, कुछ न कुछ माँगते हैं। दो पल मेरे पास शांति से नहीं बैठते! अपने लिए रोज़ नई चीजें बनाते हैं, भगवान को वही चार-पाँच चीजें बदलकर भोग लगाते हैं। मंदिर की बात सुनकर सब शांत हो गए। फिर मंदिर बोला,

देखो बच्चों, बहस करने का कोई मतलब नहीं। परिवार मजे करने गया है, तुम भी अपनी छुट्टियाँ एन्जॉय करो। चार-पाँच दिन में वो आ ही जाएँगे, फिर उनकी वही कचकच शुरू और हमारी छुट्टी खत्म।

नीपा नयन

दीपावली की रात आग का तांडव

चार गुमटियां जलकर राख, लाखों का सामान स्वाह

फायर ब्रिगेड पहुंचने से पहले ही सब कुछ जलकर हुआ खाक, सबसे बड़ी ग्राम पंचायत में अग्निशमन वाहन नहीं होने से उठे सवाल



मोहन बड़ोदिया। दीपावली की खुशियों के बीच नगर में उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब नलखेड़ा रोड स्थित पुरानी जनपद पंचायत के बाहर रखी चार गुमटियों में अचानक आग लग गई। घटना दीपावली की रात करीब एक बजे बाद की बताई जा रही है। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और चारों गुमटियों को अपनी चपेट में ले लिया। इनमें रखा लाखों रुपए का सामान जलकर पूरी तरह खाक हो गया।

आग लगने की सूचना मिलते ही वार्ड पंच मोहित सोनी, पुलिसकर्मी और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। सभी ने अपने स्तर पर आग बुझाने के प्रयास किए, लेकिन आग इतनी तेजी से फैल चुकी थी कि उस पर काबू पाना मुश्किल हो गया। समीपस्थ ग्राम बड़गांव से फायर ब्रिगेड बुलवाई गई, लेकिन उसके पहुंचने तक चारों गुमटियां जलकर राख हो चुकी थीं।

फायर ब्रिगेड नहीं होने से उठे सवाल-मोहन बड़ोदिया क्षेत्र की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत होने के बावजूद यहां स्वयं का फायर ब्रिगेड वाहन उपलब्ध नहीं है। यदि पंचायत स्तर पर अग्निशमन वाहन की व्यवस्था होती तो संभवतः समय रहते आग पर काबू पाया जा सकता था और व्यापारियों को हुए बड़े आर्थिक नुकसान को रोका जा सकता था। घटना के बाद नगर में फायर ब्रिगेड की स्थायी व्यवस्था की मांग एक बार फिर उठने लगी है।

दो इलेक्ट्रिक मैकेनिक की दुकानें भी हुईं खाक-आगजनी की इस घटना में देवकरण चतारा, अंबाराम, विक्की और दीपक की चार गुमटियां जलकर नष्ट हो गईं। इनमें दो इलेक्ट्रिक मैकेनिक की दुकानें थीं, जबकि एक गुमटी में बैंड-बाजे का सामान रखा हुआ था। आग में दुकानों का सामान और अन्य सामग्री जलकर नष्ट हो गई। प्रारंभिक अनुमान के अनुसार व्यापारियों को लाखों रुपए का नुकसान हुआ है।

पंचनामा बनाकर भेजेंगे रिपोर्ट-इस संबंध में पटवारी मुकेश राठौर ने बताया कि आगजनी की घटना का पंचनामा तैयार कर रिपोर्ट वरिष्ठ अधिकारियों को भेजी जाएगी।

आखिर मोहन बड़ोदिया जैसी बड़ी ग्राम पंचायत में आज तक फायर ब्रिगेड की व्यवस्था क्यों नहीं हो पाई? दीपावली की रात हुई इस घटना ने अग्निशमन व्यवस्था की जरूरत को एक बार फिर उजागर कर दिया

दीपावली पर कहीं खुशी कहीं मातम ?



ईश्वर की लीला भी समझ नहीं आती। वो ही त्यौहार देता है, वो ही खुशियां देता है, और फिर उसी त्यौहार पर किसी का सब कुछ छीन लेता है। अक्सर देखा जाता है जब भी होली, दिवाली, रक्षा बंधन, भैया दूज जैसे त्यौहार आते हैं तब ऐसे हादसे बहुत होते हैं। होली पर रंग में भंग पड़ जाता है, दिवाली पर दीये बुझ जाते हैं, राखी पर बहन की कलाई सूनी रह जाती है, भैया दूज पर भाई का तिलक अधूरा रह जाता है। जिस दिन घर में सबसे ज्यादा खुशी होनी चाहिए, उसी दिन सबसे बड़ा गम आ जाता है।

कैसी विडंबना है कि दीपावली के त्यौहार पर कहीं दीये जल रहे थे, कहीं लाशें जल रही थीं। कहीं सड़क हादसे हुए, कहीं अपने बिछड़ गए। किसी की दिवाली खुशियाँ लेकर आई तो कहीं मातम पसर गया। एक ही रात, एक ही शहर, एक ही आसमान के नीचे – कहीं पटाखों की आवाज पर बच्चे हंस रहे थे, और कहीं अर्थी के पीछे रोने की आवाज दब नहीं रही थी।

कुछ लोग अस्पतालों में थे, मरीज जिंदगी और मौत में झूल रहे थे। किसी का बेटा आईसीयू में वेंटिलेटर पर था, किसी का बाप ऑपरेशन थिएटर में था, किसी की मां बर्न वार्ड में पट्टियों में लिपटी तड़प रही थी। बाहर पूरा शहर दिवाली मना रहा था, पटाखों की आवाजें आ रही थीं, रोशनी ही रोशनी थी। और अंदर अस्पताल के उस सफेद कमरे में, एक परिवार हाथ जोड़कर भगवान से सिर्फ एक ही दुआ मांग रहा था, बस एक बार मेरा बेटा आंखें खोल दे, बस एक बार मेरी मां बोल दे, बस एक बार मेरे पति की सांसें चल जाएं। वहां न लक्ष्मी पूजन हुआ, न मिठाई बंटी, न नए कपड़े पहने गए। वहां तो बस एक ही पूजा थी, जिंदगी की पूजा। एक ही प्रार्थना थी, मौत को हरा देने की प्रार्थना।

एक तरफ घरों में लक्ष्मी पूजन हो रहा था, बच्चे नए कपड़े पहनकर पटाखे जला रहे थे, मिठाइयां बंट रही थीं, हंसी-खुशी का माहौल था। और दूसरी तरफ उसी रात किसी घर में चीख-पुकार मच रही थी। किसी मां का बेटा सड़क हादसे में चला गया, किसी बहन का भाई नहीं लौटा, किसी पत्नी का सुहाग उजड़ गया। दीपावली की रात जो दीये खुशी के लिए जलाए गए थे, वही दीये किसी के घर में मातम की रोशनी बन गए।

डॉक्टर भी इंसान ही हैं। वो भी अपने घर दिवाली मनाना चाहते थे, अपने बच्चों के साथ दीये जलाना चाहते थे। पर वो उस रात अस्पताल में ड्यूटी पर थे, किसी की सांसें बचाने में लगे थे। नर्सें भी दीये नहीं जला पाईं, वो दवाइयां और इंजेक्शन लेकर वार्ड-वार्ड भाग रही थीं। किसी का बेटा पटाखे से जल गया था, किसी का हाथ फट गया था, किसी की आंख में चिंगारी चली गई थी। खुशी के पटाखे कब मातम के पटाखे बन गए, पता ही नहीं चला।

दीपावली तो अंधकार पर प्रकाश की जीत का पर्व है। बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। पर इस बार इस पर्व ने कई घरों में ऐसा अंधेरा कर दिया, जो अब कभी उजाला नहीं होगा।

कोई दोस्तों के साथ दिवाली मनाकर लौट रहा था, तेज रफ्तार ने उसकी जान ले ली। कोई बाइक पर पटाखे लेने गया था, वापस ही नहीं आया। कोई शराब के नशे में गाड़ी चला रहा था, उसने अपने साथ-साथ दूसरों का भी घर उजाड़ दिया। सोचिए, जिस घर में सुबह तक दिवाली की तैयारियां हो रही थीं, शाम को वहां मातम पसर गया। जिस आंगन में रंगोली बनी थी, वहां अब लोगों के आंसू गिर रहे थे।

और सबसे दर्दनाक बात ये है कि इनमें से ज्यादातर मौतें टाली जा सकती थीं। अगर थोड़ी सी सावधानी बरती होती, अगर थोड़ी सी गति कम होती, अगर शराब पीकर गाड़ी न चलाई होती, अगर हेलमेट पहना होता, अगर पटाखों से थोड़ा दूर रहते, तो आज कई परिवार खुशी से दिवाली मना रहे होते। पर एक पल की लापरवाही, एक पल का जोश, एक पल की गलती, पूरी जिंदगी का पछतावा बन गई।

किसी के घर में इस दिवाली लक्ष्मी आई, किसी के घर से लक्ष्मी ही चली गई। किसी ने नए मकान में दिवाली मनाई, किसी का मकान ही आग में जल गया। किसी ने बेटे की नौकरी की खुशी में दीये जलाए, किसी ने बेटे की अर्थी को कंधा दिया। यही जीवन की सच्चाई है। एक ही रात, एक ही त्यौहार, एक ही शहर में, कहीं खुशी, कहीं मातम।

त्यौहार के दिन मातम एक असहनीय दर्द है, ताउम्र याद रहता है, जो कभी नहीं भूलता। आम दिनों में कोई बिछड़ जाए तो भी दर्द होता है, पर त्यौहार के दिन जो अपना चला जाए, वो घाव कभी नहीं भरता। हर साल जब दिवाली आएगी, जब घरों में दीये जलेंगे, तब उस परिवार को वही रात याद आएगी, वही चीख याद आएगी, वही अर्थी याद आएगी। लोग कहेंगे, चलो भूल जाओ, पर भूलना इतना आसान नहीं होता। जिस मां ने दिवाली की रात अपने बेटे को खोया है, वो हर दिवाली पर पहले अपने बेटे की फोटो के आगे दीया जलाएगी, फिर रोएगी। जिस पत्नी ने दिवाली पर अपना सुहाग खोया है, वो हर दिवाली पर उसी साड़ी को देखकर रोएगी, जो उसने उस दिन पहनी थी। ये दर्द ताउम्र साथ चलता है, ये मातम हर त्यौहार पर फिर से ताजा हो जाता है।

इसलिए मेरा आप सबसे हाथ जोड़कर निवेदन है। त्यौहार मनाइए, खूब मनाइए, पर सावधानी से मनाइए। दीपावली खुशियों का त्यौहार है, इसे मातम का त्यौहार मत बनाइए। गाड़ी धीरे चलाइए, शराब पीकर गाड़ी मत चलाइए, बच्चों को पटाखों से दूर रखिए, बड़ों का ध्यान रखिए। क्योंकि आपकी एक गलती, आपके परिवार की पूरी दिवाली को मातम में बदल सकती है।

जिन घरों में इस दिवाली मातम पसरा है, उनसे हम क्या कहें। उनके दुख में हम शामिल हैं। हम उनके लिए प्रार्थना ही कर सकते हैं कि भगवान उनको इस दुख को सहने की शक्ति दे। और जिन घरों में खुशी है, उनसे यही कहेंगे कि अपनी खुशी में उन दुखी परिवारों को मत भूलिए। एक दीया उनके नाम का भी जला दीजिए, जिनके घर का दीया इस दिवाली बुझ गया।

क्योंकि दीपावली का असली मतलब यही है, एक दूसरे के अंधेरे को दूर करना। अगर हम एक दीया किसी दुखी घर के लिए जला सकें, एक हाथ किसी रोते हुए की तरफ बढ़ा सकें, तो समझिए हमारी दिवाली सार्थक हो गई। यह सच्चाई है कि दीपावली पर कहीं दीये जल रहे थे, कहीं लाशें जल रही थीं।

नरेंद्र भारती,
वरिष्ठ पत्रकार

पुस्तक समीक्षा

नवगीतों का विलक्षण संसार है: 'कवि के मन से ' गीत संग्रह

हिन्दी काव्य गगन में ध्रुव तारे की भांति टिमटिमाते -जगमगाते लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ.बुद्धिनाथ मिश्र हिंदी एवं मैथिली के एक प्रबल राष्ट्रवादी रचनाकार हैं। अनेकों राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित कवि डॉ मिश्र के नवीनतम प्रकाशित नवगीत संग्रह ' कवि के मन से' में शामिल 101 गीतों का पाठ करने के उपरांत पाठक रचनाकार के' कथन' और 'कहन 'दोनों ही प्रक्रियाओं से अवगत होता है।

डॉ मिश्र कविता के छंदबद्ध रूप के सशक्त हस्ताक्षर भी हैं और पहरेदार भी। डॉ बुद्धिनाथ जैसे अन्य कवियों/गीतकारों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप गीत/नवगीत पुनः अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं और अकादमिक तौर पर पूर्ण मान्यता प्राप्त करके सम्मानजक स्थान प्राप्त कर सके हैं।

संग्रह का प्रत्येक गीत मात्र शब्दों का छंदबद्ध संयोजन नहीं है, बल्कि उनमें जीवन, प्रकृति, जीवन दर्शन, आध्यात्मिकता और मानव, समाज की प्रवृत्ति को नये-नये प्रतीकों, उपमाओं और अलंकारों से सुसज्जित किया गया है। इनमें भारतीय गांवों का परिवेश, वहां की प्राचीन संस्कृति, सरल-सहज जीवन और जीवन से मृत्यु तक के जज्बात, अहसासों, अनुभवों की लयात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इनमें ऐसी रसानुभूति होती है कि पाठक इन कविताओं के जादूई आकर्षण में तो बंधता ही है बल्कि वह आत्मानुभूति में भी गहराई तक डूब जाता है। कहते हैं कलम की कोख से निकला गीत अधरों के साज पर संगीतबद्ध होकर ही सम्पूर्णता हासिल होती है।जब ये नवगीत डॉ.बुद्धिनाथ के मधुर कंठ से स्वरबद्ध होकर उच्चरित होते हैं तो समां बंध जाता है। कवि के हृदय भाव और भी सूक्ष्मता तथा मार्मिकता पूर्ण ढंग से श्रोताओं के मन में उतर जाते हैं।

यह भी एक विडम्बना ही है कि भक्ति गीत और फिल्मी गीत तो समाज में भरपूर सराहे जाते हैं और समर्थन प्राप्त करते हैं बल्कि इनके श्रोता भी स्वमेव पैदा होते जाते हैं। लेकिन साहित्यिक गीतों के साथ ऐसा कम हो पाता है।कवि डॉ बुद्धिनाथ मिश्र सरीखे उच्च स्तरीय साहित्यिक गीतों को उतने ही प्रभावशाली गेयता के साथ प्रस्तुत करने का हुनर रखते हैं, वे ही इस गीतकारी को इसका हक दिलाने में कामयाब हुए हैं। उपरोक्त कथन को प्रमाणित करती कुछ बानगियां प्रस्तुत की जा रही हैं। डॉ बुद्धिनाथ मिश्र' लद गए दिन' गीत में बदलते समय के यथार्थ पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं -

'छोड़ कर लिखना सुनहरे गीत/आओ लिखे ?नारे/प्रेम के अनुबंध के दिन/लद गए हैं/शोर करने काफ़िले संसद गए हैं/पी गए मीठी नदी का नीर/सब ये सिंधु खारे। '

गीतकार राम महिमा की महानता और विराटता का गुणगान करते हुए कहता है -

' समय शिला पर सूर्य रश्मि से /लिखा तुम्हारा नाम/जग कहता धरती की धड़कन/हम कहते हैं राम/वामन से विराट तक सबका/जो है पालनहार/करुणा सागर आर्तजनों का/दुखियों के आधार/मर्यादा की शिखर कल्पना/पाती जहां विराम। '

यहां शब्द चयन एवं संयोजन कमाल है। इनसे गीत के अर्थ और भी गहरे और भावपूर्ण हो गए हैं।

गीतकार की पैनी दृष्टि गांवों के हो रहे शहरीकरण से जो सामाजिक बदलाव आ रहे हैं

उन्हें बहुत सूक्ष्मता से देखती और परखती है और उसके दुष्परिणामों के संबंध में सचेत भी करती है।गीत' रोटी देता खेत है 'की पंक्तियां देखें-

' सड़कें लाती हैं विकास पर/रोटी देता खेत है/बिना खेत के महल अटारी/ धूप चमकती रेत है/ वैसे तो इस संग्रह का प्रत्येक गीत सोद्देश्य और मन स्पर्शी है। फिर भी

'आग-पानी,बंजारा मन,हम कहते हैं राम,यह दीवारों का जेवर है,गंगा को घन दे,सौ बार करेगा, क्यों रोता है?, अखबार,दिन गिनती के,रोटी देता खेत है,केंचुल छोड़ गया है , बहुत दिनों बाद,सारेगम तू गा,जिनकी आंखों में, अगर न होगा जल तो,अभी नहीं सोचा था, निकला कितना दूर,रात हुई है, आपकी याद आती रही, मुझको जी भर कर खाओ आदि गीत बार-बार पढ़ने को मन करता है। निस्संदेह ये उच्च स्तरीय साहित्यिक गीत जहां पाठकों और श्रोताओं को साहित्यिक -आत्मिक संतुष्टि देंगे वहीं नवगीतकारों और शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी करेंगे। उत्कृष्ट गीत संग्रह के सृजन हेतु डा बुद्धिनाथ मिश्र जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

समीक्षक
डॉ धर्मपाल साहिल
होशियारपुर पंजाब
(9876156964)

पुस्तक-कवि के मन से
(नवगीत संग्रह)
गीतकार-डॉ बुद्धिनाथ मिश्र
प्रकाशक-इंडिया नेट बुक्स, नोएडा
पृष्ठ - 213
मूल्य -350/-

द्वारकाधीश मंदिर पर सुहाग पड़वा पर गोवर्धन पूजा



महिदपुर जवाहर डोसी पीयूष जवाहर मार्ग स्थित श्री द्वारकाधीश मंदिर पर सुहाग पड़वा के पर्व पर श्री गोवर्धन पूजा की गई इस अवसर पर प्रतिभा तिवारी,हर्षा तिवारी,उषा लखेरा,पिंकी लखेरा,मीना लखेरा ,मधु राठौर आदि महिलाएं उपस्थित रहीं।